International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आधुनिक भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता

Dr. Shivali Shakya

Asst. Professor, Commerce, Govt. Dr. Shyama Prasad Mukherjee Science and Commerce College, Bhopal (M.P.)

शोध सारांश–

आज हम देख सकते हैं कि सामान्यतः सभी महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही है। अधिकांश महिलाएं पुरुषों के समान कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। महिलाएं घर से बाहर निकलकर समाज व देश को उन्नति की ओर आगे ले जा रही है। महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है, चाहे वह कला क्षेत्र हो या विज्ञान, चाहे वह धरती हो या आकाश, महिलाओं ने अपना योगदान दिया है। इसके साथ ही घरेलू कार्यों से लेकर बाहर के सभी उद्योग संस्थान, ऑफिस, इंजीनियरिंग क्षेत्र, व्यवसायिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र आदि सभी में महिलाओं की भूमिका बढ़ती ही जा रही है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें महिलाओं की भागीदारी न हो। महिलाएं चाहे तो कुछ भी कर सकती है । कहते है कि हर पुरुष की सफलता के पीछे एक महिला का ही हाथ होता है। यह बिलकुल सत्य है , चाहे वह एक माँ के रूप में हो या पत्नी के रूप में हो या पुत्री के रूप में । सभी रूपों में महिलाओं की अहम भूमिका होती है। आज हमारे देश में महिलाओं की भागीदारी आर्थिक रूप से भी बढ़ती जा रही है जिसका प्रभाव हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा है। देश की अर्थव्यवस्था में GDP के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका 17% एवं पुरुषों की संख्या 53.26% है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। महिलाओं की सशक्त भागीदारी समाज व देश के लिये काफी लाभदायक है। महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है। सरकार द्वारा महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए बहुत सारी प्रोत्साहन योजनाओं का संचालन किया जा रहा है महिलाओं के समग्र विकास, लैंगिक समानता व न्याय को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन तैयार किया गया है, जो एक व्यापक मिशन है। उसके माध्यम से महिला के समग्र विकास के लिये प्रयास किये जाएंगे और सामाजिक परिवर्तन के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जाएगा। वास्तव में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत बढ़ा दिया जाए तो देश को विकसित भारत बनाया जा सकता है और यह महिलाओं को समान अवसर व समान अधिकार प्रदान करके ही किया जा सकता है। महिलाएं देश की जननी हैं एवं उसका उत्थान भी महिलाओं के द्वारा ही किया जा सकेगा।

कीवर्डस - सामाजिक न्याय, समग्र विकास, लैंगिक समानता।

परिचय-

आज के वर्तमान युग में हमारे देश में सशक्तिकरण पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। सशक्तिकरण का आशय किसी व्यक्ति के मजबूत बनाना होता है। जिससे वह अपने जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय ले सके और समाज में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी दे सके। सामान्यतः यह माना जाता था कि हमारा देश पुरुष प्रधान है अर्थात् पुरुष सशक्त होते हैं जो अपने हिसाब से सभी निर्णय लेते हैं। पुरुष ही देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाते हैं परंतु यह तथ्य मिथ्या है आज हमारे भारत देश की महिलाएं भी सशक्तिकरण की ओर अग्रसर हो रही है अर्थात् वे अपने निर्णय स्वयं ले सकती है, अपनी जीविका स्वयं चला सकती हैं , अपने परिवार का भरण पोषण स्वयं कर सकती हैं एवं देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे सकती है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को शक्तिशाली बनाना जिससे वे अपने जीवन की जिम्मेदारी ले सके अर्थात् आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना सशक्तिकरण कहलाता है । आज वर्तमान युग में महिला सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है क्योंकि वह लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और समग्र विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिससे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में समान अवसर मिल सके। महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में अवसर उपलब्ध कराने से वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकती है और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकती हैं। महिला सशक्तिकरण लैंगिक समानता और भेदभाव को कम करने में मदद करता है जिससे सभी के लिए एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज बनता है।

जब महिलाएं सशक्त होती है तो वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाती है जिससे उनके परिवार और समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। सशक्त महिलाएं अपने परिवार के लिये बेहतर निर्णय ले सकती है जिससे उनके परिवार में खुशहाली और स्थिरता आती है। महिला सशक्तिकरण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि शिक्षा, महिलाओं को ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास प्रदान करती है जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठा सकती है और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए हमारे देश में भारत सरकार द्वारा कई प्रकार की योजनाएं भी चलाई जा रही है जैसे – महिला समृद्धि योजना, महिला हेल्पलाइन, राजीव गाँधी योजना , कृषि सखी कार्यक्रम, उज्ज्वला योजना ,इंदिरा गाँधी योजना, मातृत्व सहयोग योजना, लखपति दीदी योजना आदि। इन सभी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को अपना स्वयं का उद्यम खोलने या व्यवसाय करने हेतु सहायता प्रदान की जाती है जिससे कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें एवं अपने परिवार के पुरुषों के साथ कार्य में सहयोग दे सकें। महिलाओं के लिए कई प्रकार के कानून भी बनाए गए हैं जिससे कि महिलाओं

के हितों की रक्षा की जा सकती है। महिलाएं अपनी आत्मरक्षा स्वयं कर सकती है। महिलाओं के लिए प्रति वर्ष 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की घोषणा भी की गई है। वर्तमान में महिला सशक्तिकरण अभियान [NMEW] भी सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। अतः महिला सशक्तिकरण से समाज व देश को सशक्त बनाकर देश के आर्थिक विकास में काफी वृद्धि की जा सकती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य-

विषय पर अध्ययन करने का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान का अध्ययन करना है। इसके साथ ही जो भी योजनाएं महिला सशक्तिकरण के लिए बनायी गयी है, उनकी भी जानकारी प्राप्त करना है। महिला सशक्तिकरण के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार है –

1. महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को जानना।
2. समाज में लैंगिक भेदभाव को समझना।
3. महिला सशक्तिकरण लिए सरकार द्वारा प्रदान किये जाने वाली योजनाओं का अध्ययन करना।
4. महिला सशक्तिकरण के रास्ते में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।
5. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता –

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाना बहुत आवश्यक है विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। शहरी क्षेत्र में तो महिलाओं की भागीदारी में पहले की अपेक्षा काफी वृद्धि हुई है और शिक्षा, साक्षरता एवं आर्थिक स्थिति आदि में भी महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा है परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति चिंताजनक है जहाँ उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक अवसरों तक पहुंचने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर शहरी महिलाओं की तुलना में कम है। 2010 से 2021 के बीच भारत में महिला साक्षरता दर में 14.4% की वृद्धि हुई है 2021 में साक्षरता दर में पॉइंट 0.6% की वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के कार्यबल का प्रयोग शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की अपेक्षा अधिक किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में लगभग 82% प्रतिशत महिलाओं द्वारा कृषि एवं पशु सम्बन्धी कार्यों में अपना योगदान देकर आजीविका उत्पादन में औसत वृद्धि की है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के पास उत्पादक संसाधनो और सेवाओं तक पहुँच कम होती है। उन्हें बाजर, शिक्षा, सूचना तथा वित्तीय संसाधनों तक पहुँचने में मुश्किल होती है। लैंगिक भेदभाव के कारण उन्हें अक्सर अधिक कार्य करना पड़ता है और उन्हें काम का उचित भुगतान भी नहीं किया जाता है या कम किया जाता है । शहरी क्षेत्रों में महिलाएं घर से बाहर काम तो करती है लेकिन उन्हें घर व परिवार दोनों में सामंजस्य बैठाना पड़ता है जिससे उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज शहरी क्षेत्रों में भी पुरुषों के समान महिलाओं को दर्जा नहीं दिया जाता

है और ना ही उनके कार्यों की प्रशंसा की जाती है जो महिलाएं घर से बाहर कार्य करती हैं उन्हें कई बार समाज द्वारा गलत बातें सुनना पड़ती है या उनके साथ कृत्य होने या बुरा लांछन लगाने का कार्य भी समाज द्वारा किया जाता है, जिससे महिलाएं मानसिक रूप से प्रताड़ित होती है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कार्यक्रम व योजनाएं शुरू की गई है किन्तु उनका पालन सख्ती से नहीं किया जाता एवं महिलाओं का शोषण किया जाता है।

महिलाओं की स्थिति सुधारने के उपाय-

आज भी देश में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं है। उसे सुधारा जाना अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिये निम्नलिखित महत्वपूर्ण उपाय किये जा सकते हैं।

1. महिलाओं को शिक्षा एवं प्रशिक्षण देना।
2. महिलाओं की उत्पादन क्षमता को बढ़ाना।
3. पुरुषों के समान सभी अधिकार महिलाओं को प्रदान किया जाना।
4. महिलाओं को सामुदायिक भागीदारी में शामिल करना।
5. महिलाओं को नेतृत्व के अवसर देना।
6. ग्रामीण महिलाओं के लिए सामाजिक आर्थिक अवसरों में सुधार करना ।
7. महिलाओं को कौशल विकास के लिये प्रशिक्षण देना ।
8. महिला को बैंको से ऋण लेने के लिए सशक्त बनाना ।
9. महिलाओं के लिए बनाए गए कानूनों से महिलाओं को अवगत कराना एवं उनके प्रयोग की जानकारी प्रदान करना।
10. महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ाना।
11. महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक रूप से समानता देना।

महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाएं –

भारत सरकार द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही है जिससे महिला सशक्त हो सके एवं स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रयास कर सकें। एक सशक्त महिला अपने देश व समाज का उत्थान कर सकती है। महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाएं इस प्रकार है।

1. महिला स्वयं सहायता समूह योजना।
2. महिला उद्यमिता निधि योजना।
3. प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना।
4. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की योजना।

5. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना ।
6. सुकन्या समृद्धि योजना।
7. इंदिरा गाँधी मातृत्व सहयोग योजना।
8. महिला शक्ति केंद्र योजना।
9. फ्री सिलाई मशीन योजना।
10. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना ।
11. प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम।
12. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ।
13. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन।

महिला सशक्तिकरण के लाभ-

हमारे देश में महिला सशक्तिकरण किया जाना अत्यंत आवश्यक है। सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाएं अपने परिवार, समाज एवं देश को उन्नति की ओर आगे ले जा सकती है। सशक्तिकरण के लाभों को निम्नलिखित प्रकार से समझाया जा सकता है-

1. महिला सशक्तिकरण से महिलाओं में आत्म सम्मान की भावना बढ़ती है।
2. महिला सशक्तिकरण से महिलाएं आत्मनिर्भर बनती है वह स्वयं व्यवसाय करती है जिससे उनकी आय के स्त्रोतों में वृद्धि होती है और परिवार गरीबी रेखा से बाहर आता है।
3. महिला सशक्तिकरण से महिलाएं अपने हुनर की पहचान कर पाती है और देश के विकास में अपना योगदान देती है।
4. महिला सशक्तिकरण से महिलाओं में समाज में भेदभाव, हिंसा और अन्याय के खिलाफ़ लड़ने का आत्मविश्वास पैदा होता है।
5. महिला सशक्तिकरण से महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता मिलती है।
6. महिला सशक्तिकरण से महिलाओं को अपने जीवन से सभी जुड़े सभी फैसले लेने की आजादी मिलती है।

निष्कर्ष-

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में पूर्व की तुलना में परिवर्तन तो आया है परंतु अभी भी उनकी स्थिति को और अधिक सुधारने की आवश्यकता है। कई महिलाएं घर से बाहर तो निकली है फिर भी उन्हें पुरुषों के समान सम्मान नहीं दिया जाता है। स्थिति आज भी सभी जगह समान नहीं है। कई स्थानों पर तो महिलाओं को बहुत अधिक

सम्मान दिया जाता है एवं उनके कार्यों की प्रशंसा भी की जाती है। परंतु कई जगह उसका अपमान किया जाता है उसे पुरुषों के समान कार्य करने पर भी कहा जाता है कि यह तुम्हारा फ़र्ज हैं जिससे उसके आत्मसम्मान को काफी ठेस पहुंचती है। महिलाओं का शोषण भी कई जगहों पर किया जाता है। आज आवश्यकता है तो इस बात की, कि केवल महिलाओं को ही जागरूक करना अनिवार्य नहीं है, बल्कि महिलाओं के साथ- साथ पुरुष समाज को एवं महिलाओं के परिवार के सदस्यों को भी जागरूक करना आवश्यक है जिससे कि वह अपने कार्यक्षेत्र पर पूर्ण रूप से ध्यान दे सके। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर सकें। महिलाओं का यह स्वरूप हमारे विकासशील राष्ट्र को विकसित राष्ट्र के रूप में बदल सकता है। प्रत्येक पुरुष को महिलाओं का सम्मान करना चाहिये एवं उसके आत्मसम्मान की रक्षा भी करना चाहिये। साथ ही उसके कार्यों में सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाओं का प्रयोग करने हेतु महिलाओं को पुरुषों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। हमें एक सशक्त भारत का निर्माण करना चाहिये। समाज में ऐसा माहौल बनाना चाहिये जिससे कि सरकार द्वारा महिलाओं के विकास के लिए बनायी गयी योजनाओं से उन्हें उचित लाभ मिल सके। कोई लैंगिक भेदभाव नहीं होना चाहिए और महिलाओं को सम्मान की भावना के साथ देश में सिर ऊँचा उठाकर जीने एवं अपना निर्णय लेने का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिये तभी देश का विकास संभव है।

Bibliography

1. भारत में महिला सशक्तिकरण हेतु प्रयास(सितंबर 2016), रमेश प्रसाद द्विवेदी,(पृष्ठ क्रमांक180-188)
2. https://ijrssonline.in महिला सजा एवं दिशा(2013)पूनम साहू एवं वासुदेव डेवेलियर ,(पृष्ठ क्रमांक 57-59)
3. https://IJFMR महिला सशक्तिकरण पर डिजिटलीकरण का प्रभाव,(अक्टूबर2023) डॉ., आशीष मिश्रा एवं श्रीमती संगीता चौहान Vol.5, Issue 5.
4. https://WWW.IJSRST भारत में महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएं: एक अध्ययन डॉ.शीतल शर्मा
5. https://WWW.India.gov.in
6. https://kulgam.nic.in
7. https://socialwelfare.vikaspedia.in
8. https://pib.gov.in
9. https://rural.gov.in